IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"उत्तराखंड के केंद्रीय विश्वविद्यालय में मीडिया शिक्षा की संरचना एवं स्थिति"

[1] रजत पाण्डेय ,[2] डॉ. स्मिता वशिष्ट

[1] शोधार्थी, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, [2] विभागाध्यक्ष, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग,

[1] देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार, उत्तराखण्ड (https://orcid.org/0009-0006-9281-6497)

शोध सारांश:

: भारत में मीडिया शिक्षा का क्षेत्र पिछले दो दशकों में उल्लेखनीय रूप से विस्तृत हुआ है। उत्तराखंड जैसे नवगठित राज्यों में इसकी भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो जाती है, जहां भूगोल, संसाधन और नीतिगत ढांचे मीडिया शिक्षा की गुणवत्ता और पहुंच को प्रभावित करते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र विशेष रूप से उत्तराखंड के *हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय*, एकमात्र केंद्रीय विश्वविद्यालय, में मीडिया शिक्षा की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण करता है। अध्ययन पाठ्यक्रम की गुणवत्ता, तकनीकी संसाधनों की उपलब्धता, संकाय संतुलन और छात्र संतुष्टि जैसे पहलुओं को समाहित करता है। साथ ही, यूजीसी के दिशा-निर्देशों से तुलनात्मक मूल्यांकन कर यह जानने का प्रयास किया गया है कि यह संस्थान राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप कहां खड़ा है।

कूट शब्द - मीडिया शिक्षा, केंद्रीय विश्वविद्यालय, उत्तराखंड, पाठ्यक्रम, यूजीसी, तकनीकी संसाधन, छात्र संतुष्टि, शिक्षण गुणवत्ता

परिचय:

वर्तमान युग सूचना, संचार और तकनीक की अभूतपूर्व क्रांति का युग है, जहाँ मीडिया केवल सूचना का माध्यम नहीं, बल्कि समाज निर्माण, विचार विमर्श और लोकतांत्रिक सहभागिता का एक शक्तिशाली उपकरण बन चुका है। विशेषकर युवाओं के लिए मीडिया शिक्षा महज़ एक व्यावसायिक प्रशिक्षण भर नहीं, बल्कि यह उन्हें सूचना साक्षरता, आलोचनात्मक सोच, और सामाजिक उत्तरदायित्व की समझ प्रदान करने का माध्यम भी बन गई है।[1]

भारत में तेजी से बदलते संचार तंत्र और मीडिया परिदृश्य के बीच, मीडिया शिक्षा की भूमिका पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। उत्तराखंड जैसे नवोदित और भौगोलिक रूप से विविध राज्य में, जहाँ संसाधनों की सीमाएं और क्षेत्रीय विषमता स्पष्ट है, वहाँ मीडिया शिक्षा को एक सामाजिक-शैक्षणिक उपकरण के रूप में देखने की आवश्यकता है, जो न केवल ज्ञानवर्धन बल्कि सामुदायिक सशक्तिकरण का भी माध्यम बन सके।

हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, राज्य का एकमात्र केंद्रीय विश्वविद्यालय होने के नाते, उत्तराखंड में मीडिया शिक्षा के क्षेत्र में एक *नमूना संस्थान* की भूमिका निभाता है। इसकी शैक्षणिक दृष्टि, संसाधन-संरचना, और शैक्षणिक कार्यक्रम यह दर्शाते हैं कि मीडिया शिक्षा की गुणवत्ता और प्रभाव किस प्रकार राष्ट्रीय स्तर के मानकों से मेल

[1] पाण्डेय रजत) २०१९ : (उत्तराखंड के गढ़वाल क्षेत्र में मीडिया शिक्षा की स्थिति : एक अध्ययनए शोध प्रबंध – एम फिलए पृष्ट संख्या – ०९

खाती है या उनसे भिन्न है। इस शोधपत्र का उद्देश्य इसी केंद्रीय विश्वविद्यालय में संचालित मीडिया शिक्षा की संरचना, प्रभावशीलता और व्यावहारिकता का आलोचनात्मक विश्लेषण करना है।

उद्देश्य:

- उत्तराखंड के केंद्रीय विश्वविद्यालय में मीडिया शिक्षा की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण करना।
- विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम, संसाधन एवं शिक्षण प्रणाली का यूजीसी के मानकों से तुलनात्मक अध्ययन करना।

साहित्यिक सर्वेक्षण:

साहित्यिक सर्वेक्षण के आधार पर पता चलता है कि मेरे शोध" उत्तराखंड के केंद्रीय विश्वविद्यालय में मीडिया शिक्षा की संरचना एवं स्थिति "से संबंधित कोई शोध कार्य मेरे संज्ञान में नहीं हुए है। इससे संबंधित जो कुछ कार्य हुए हैं वे इस प्रकार हैं।

1. मूर्ति, सी.एस.एच.एन, (2020) : मीडिया एजुकेशन इन इंडिया - द हैंडबुक ऑफ़ मीडिया एजुकेशन रिसर्च।

लेखक ने भारत में मीडिया शिक्षा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को रेखांकित करते हुए बताया कि इसकी दिशा प्रारंभ से ही स्पष्ट नहीं रही। जबकि पश्चिमी देशों में इसे सामाजिक विकास का उपकरण माना गया, भारत में यह मुख्यतः साक्षरता अभियान तक सीमित रही। तकनीकी बदलावों के बावजूद, ग्रामीण भारत में पारंपरिक मीडिया प्रभावी रहा। उन्होंने नीति और क्रियान्वयन के बीच के अंतर को रेखांकित करते हुए एक समग्र दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता पर बल दिया।

2. दास, बिस्वजीत) .2020 : (मीडिया एजुकेशन अस अ डेवलपमेंट प्रोजेक्ट :कनेक्टिंग इमैन्सपेटोरी इन्टेरेस्टस एंड गवर्नेंस इन इंडिया।

यह शोधपत्र इंगित करता है कि भारत में मीडिया शिक्षा को अभी भी शैक्षणिक मुख्यधारा में उचित स्थान नहीं मिल पाया है। इसकी असंगठित प्रकृति, पाठ्यक्रमों की असंगति और प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी इसे सीमित कर रही है। लेखक ने अंतरराष्ट्रीय उदाहरणों के संदर्भ में भारत में मीडिया शिक्षा को एक स्वतंत्र अनुशासन के रूप में स्थापित करने की आवश्यकता बताई है।

3. झा, आलोक और गंगवार, रचना) .2020 : (कंस्ट्रक्ट) सग्जेस्टिव (मॉडल्स फॉर मीडिया एजुकेशन इन इंडिया :अ कनेक्टिंग थ्रेड्स ऑफ़ मीडिया एकेडेमिया एंड मीडिया इंडस्ट्री।

इस अध्ययन में मीडिया अकादमिक संस्थानों और उद्योग के बीच बढ़ती दूरी को उजागर किया गया है। पाठ्यक्रम की अद्यतनता, हैंड्स-ऑन ट्रेनिंग और क्रिटिकल मीडिया पेडागॉजी जैसे दृष्टिकोणों को अपनाने की सिफारिश की गई है ताकि छात्रों में समसामयिक दक्षता और आलोचनात्मक सोच विकसित हो सके। लेख में अकादमिक और इंडस्ट्री के बीच संवाद की आवश्यकता पर भी बल दिया गया है।

4. मलिक .के .कंचन, (2021) : मीडिया एजुकेशन एंड रीजनल लैंग्वेज जर्नलिज्म इन इंडिया।

इस शोधपत्र में यह बताया गया है कि भारत में क्षेत्रीय भाषा पत्रकारिता की चुनौतियों पर ध्यान केंद्रित करते हुए बताया कि पेशेवर गुणवत्ता और प्रशिक्षण में अभी भी कमी है। उन्होंने शोध और समुदाय आधारित मीडिया को मजबूत करने का सुझाव दिया, जिससे मीडिया शिक्षा सामाजिक समावेशन, भाषायी विविधता और स्थानीय सशक्तिकरण का माध्यम बन सके।

5. डॉ .वशिष्ठ, स्मिता .पाण्डेय, रजत .व सिंह, दीपशिखा) 2025 : (स्टेटस ऑफ़ मीडिया एजुकेशन इन इंडिया :अ रिव्यु स्टडी।

यह अध्ययन भारत में मीडिया शिक्षा की वर्तमान स्थिति का व्यापक विश्लेषण करता है। लेख में मीडिया शिक्षा की अंतरविषयक प्रकृति को रेखांकित करते हुए, सैद्धांतिक समझ व व्यावहारिक प्रशिक्षण के संतुलन पर बल दिया गया है। अध्ययन का उद्देश्य इसे शोधकर्ताओं, नीति-निर्माताओं और संस्थागत योजनाकारों के लिए एक दिशासूचक दस्तावेज के रूप में प्रस्तुत करना है।

शोध क्रियाविधि:

- शोध प्रकार :वर्णनात्मक एवं तुलनात्मक
- अनुसंधान पद्धति :सर्वेक्षण
- नमूना :हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय ,श्रीनगर ,उत्तराखंड के 40 छात्र
- डेटा संग्रह उपकरण :प्रश्नावली
- विश्लेषण विधि :मात्रात्मक एवं गुणात्मक दोनों

मीडिया का अर्थ:

मीडिया का मूल अर्थ संप्रेषण के माध्यम से सूचना, विचार और संस्कारों के आदान-प्रदान से जुड़ा है। यह केवल खबरों का वाहक नहीं बल्कि जनमत निर्माण, सामाजिक चेतना और लोकतांत्रिक संवाद का सशक्त उपकरण भी है। भारत में मीडिया का विकास उपनिवेश काल से हुआ, जहां प्रारंभ में प्रिंट मीडिया और बाद में रेडियो, टेलीविजन तथा अब डिजिटल मीडिया ने इसमें प्रमुख भूमिका निभाई।

उत्तराखंड में मीडिया शिक्षा का विकास :एक दृष्टि-

उत्तराखंड में मीडिया शिक्षा की जड़ें ऐतिहासिक रूप से गहरी रही हैं। 19वीं शताब्दी से ही इस क्षेत्र में पत्रकारिता और जनसंचार के माध्यम से जनजागरण का प्रयास होता रहा। अल्मोड़ा अखबार) 1871) जैसे स्थानीय प्रकाशनों ने सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक आंदोलनों में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। टिहरी रियासत में 1935 में रेडियो[2] की शुरुआत और मंसूरी जैसे शहरों में अंग्रेजी भाषा के समाचार पत्रों की उपस्थिति उत्तराखंड में मीडिया की गहरी ऐतिहासिक उपस्थिति को दर्शाती है।[3]

मीडिया शिक्षा के संस्थागत स्वरूप की बात करें, तो हरिद्वार स्थित गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय को" हिंदी पत्रकारिता की प्रथम पाठशाला "कहा गया है। यहाँ से कई प्रतिष्ठित पत्रकार और संपादक निकले, जिन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर मीडिया में उल्लेखनीय योगदान दिया। यह संस्थान पत्रकारिता और साहित्य की साझा परंपरा का उत्कृष्ट उदाहरण रहा है।

उत्तराखंड के केंद्रीय विश्वविद्यालय में मीडिया शिक्षा :

हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर) गढ़वाल (उत्तराखंड का एकमात्र केंद्रीय विश्वविद्यालय है, जो न केवल क्षेत्रीय बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर भी उच्च शिक्षा के क्षेत्र में विशेष स्थान रखता है। यहाँ का पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग राज्य के प्रमुख मीडिया शिक्षण केंद्रों में से एक है।

- **स्थापना एवं विकास**

एचएनबी गढ़वाल केंद्रीय विश्वविद्यालय में पत्रकारिता एवं संचार केंद्र विभाग की स्थापना 1976 में बिरला परिसर, श्रीनगर) गढ़वाल (में की गई थी। 18 सितंबर 2000 को इसे वर्तमान नाम दिया गया। विभाग ने नई शिक्षा नीति-2020

[2] https://www.kafaltree.com/first-radio-in-tehri-garhwal-uttarakhand/

[3] डॉ .मेहरबान सिंह गुसाईं) २०१८ : (हिस्ट्री ऑफ उत्तराखंडए शोध प्रबंध

के तहत बीए ऑनर्स) पत्रकारिता और संचार (कार्यक्रम 2022-23 से प्रारंभ किया है। इसके अतिरिक्त एमए और पीएचडी कार्यक्रम भी संचालित किए जा रहे हैं।[4]

- **शैक्षणिक ढांचा और संसाधन**

विभाग में प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के लिए समर्पित स्टूडियो और लैब की सुविधा है, जो छात्रों को ऑडियो-विजुअल, फोटोग्राफी, रेडियो और संपादन जैसे विभिन्न व्यावहारिक कौशल प्रदान करती है। साथ ही क्लासरूम, सेमिनार हॉल, कॉन्फ्रेंस रूम और विभागीय पुस्तकालय जैसी बुनियादी सुविधाएँ भी उपलब्ध हैं। जिनका विवरण इस प्रकार है-

- **सुविधाएँ एवं संसाधन:**
  - **ऑडियो-विजुअल स्टूडियो**: प्रैक्टिकल ट्रेनिंग हेतु स्थापित स्टूडियो में छात्र न्यूज़ प्रोडक्शन, एंकरिंग और इंटरव्यू जैसे कौशल सीखते हैं।
  - **फोटोग्राफी लैब**: जहां छात्र प्रकाश, फ्रेमिंग, कैमरा संचालन और इमेज एडिटिंग जैसे व्यावसायिक पहलुओं को सीखते हैं।
  - **कम्प्यूटर लैब एवं संपादन कक्ष**: जहां छात्र विभिन्न मीडिया सॉफ्टवेयर जैसे Adobe Premiere, Photoshop, और अन्य एडिटिंग टूल्स का अभ्यास करते हैं।
  - **ऑडिटोरियम**: विभाग में मीडिया कार्यशालाओं, स्क्रीनिंग, गेस्ट लेक्चर और अन्य आयोजन होते हैं, जो छात्रों के व्यावसायिक विकास में सहायक होते हैं।
- **शिक्षण स्टाफ एवं छात्र अनुपात:**

विभाग में 5 शिक्षकों के पद स्वीकृत हैं। औसतन 125 छात्रों के लिए शिक्षण स्टाफ और संसाधनों की व्यवस्था की गई है।

  - स्नातक स्तर पर छात्र-अध्यापक अनुपात 1:12 है, जो यूजीसी के 1:25 मानक से बेहतर है।
  - परास्नातक स्तर पर अनुपात 1:10 है, जो यूजीसी मानकों के अनुरूप है।
- **तकनीकी सुविधाएं (सारांश रूप में) -**

क्रं सं	प्रकोष्ठ	संसाधन
01	प्रिन्ट मीडिया	01 लैब (इंटरनेट युक्त)
02	इलेक्ट्रॉनिक मीडिया	01 स्टूडियो
03	रेडियो	01 स्टूडियो
04	फोटोग्राफी	01 लैब
05	अन्य	क्लासरूम, सेमीनार हॉल, कॉन्फ्रेंस रूम, विभागीय पुस्तकालय

पाठ्यक्रम की स्थिति और यूजीसी मिलान:

विभाग में स्नातक, परास्नातक और शोध स्तर पर पत्रकारिता एवं संचार विषय के व्यापक पाठ्यक्रम संचालित हैं। पाठ्यक्रम में तकनीकी प्रशिक्षण, संस्थागत भ्रमण, मीडिया परियोजनाएँ एवं कार्यशालाएँ शामिल हैं। यूजीसी के मॉडल करिकुलम के अनुसार जिन प्रयोगशालाओं, संसाधनों और पाठ्य संरचना की अपेक्षा की गई है, विभाग उन अधिकतर मानकों को आंशिक रूप से पूरा करता है। हालांकि, कुछ स्थायी शिक्षकों और तकनीकी कर्मचारियों की संख्या की दृष्टि से विभाग में और सुधार की संभावना है।

[4] https://www.hnbgu.ac.in/school/arts/journalism/srinagar/about-department

आंकड़ों का विश्लेषण एवं विवेचना:

प्रस्तुत शोध में उत्तराखंड के केन्द्रीय विश्वविद्यालय हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय के पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के 40 छात्रों से आँकड़ें प्रस्तावित थे, जिनमे से 27 प्रतिउत्तर प्राप्त हुए।
आँकड़ें संयुक्त रूप से स्नातक एवं परास्नातक के छात्रों से लिए गए हैं।

अध्ययन के मुख्य बिन्दु–

- संस्थान का पाठ्यक्रम कैसा है ?
- संस्थान में तकनीकी सुविधा कैसी है ?
- शिक्षण पद्धति संतोषजनक है या नहीं ?
- बुनियादी ढांचा एवं पाठ्यक्रम यूजीसी के मानक के अनुरूप है या नहीं ?
- संस्थान के माध्यम से प्लेसमेंट कैसा है ?

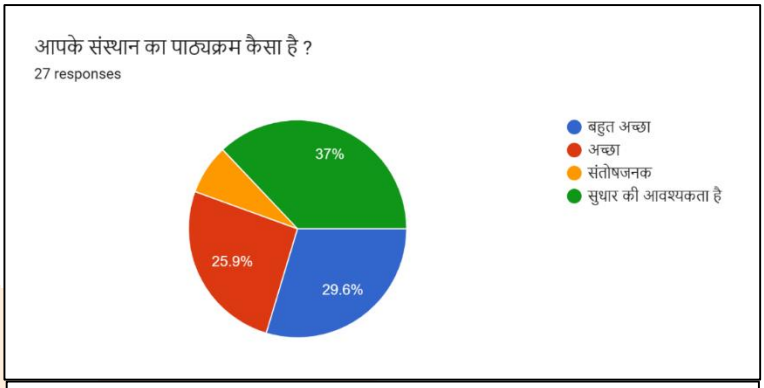

वृतीय आरेख01 –

उपरोक्त प्रश्न के अनुसार33 .3% छात्रों ने बेहतर स्ट्रक्चर को चुना, उतने ही अनुपात में33 .3% छात्रों ने सभी विकल्पों का चयन किया है। अतः प्राप्त आंकड़ों से ज्ञात होता है की छात्रों ने संस्थान का चुनाव किस आधार पर किया है।

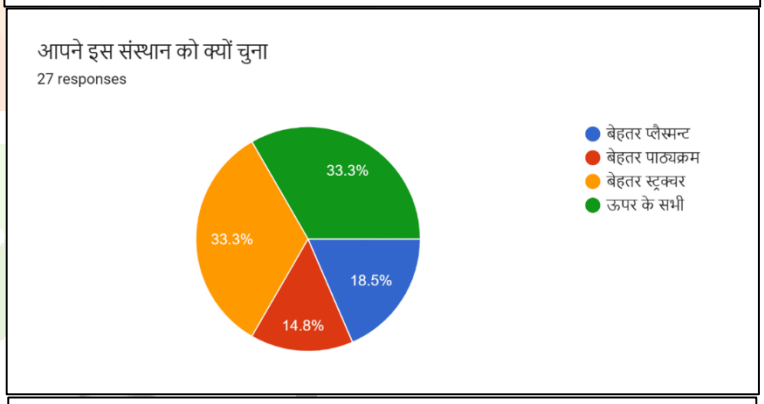

वृतीय आरेख 02 –

उपरोक्त प्रश्न के अनुसार37 % छात्रों ने विषय के पाठ्यक्रम में सुधार की आवश्यकता विकल्प का चयन किया है।29 .6% छात्रों ने कहा है की पाठ्यक्रम बहुत अच्छा है। अतः प्राप्त आंकड़ों के अनुसार संस्थान को पाठ्यक्रम में सुधार की आवश्यकता है।

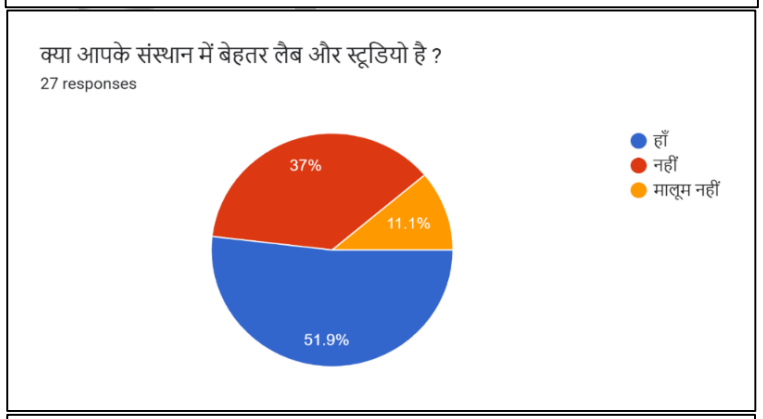

वृतीय आरेख03 –

उपरोक्त प्रश्न के अनुसार51 .9% छात्रों ने हाँ का विकल्प चुन कर बताया है की उनके संस्थान में बेहतर लैब स्टूडियो है।37 % छात्रों से इस व्यवस्था से इनकार किया है। अतः प्राप्त आंकड़ों से स्पष्ट है कि संस्थान में बेहतर लैब व स्टूडियो है।

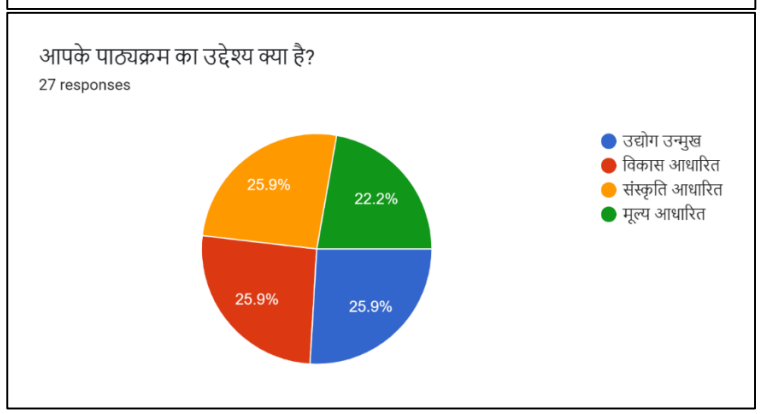

वृतीय आरेख 04 –

उपरोक्त प्रश्न के अनुसार25 .9% छात्रों ने पाठ्यक्रम का आधार उद्योग उन्मुख, 25.9% छात्रों ने विकास उन्मुख, 25.9% छात्रों ने संस्कृति आधारित चुना है। अतः प्राप्त आंकड़ों के अनुसार संस्थान के पाठ्यक्रम का उद्देश्य ¾ विकल्पों को संतुष्ट करता है।

वृतीय आरेख – 05

उपरोक्त प्रश्न के अनुसार 37% छात्र शिक्षण पद्धति एवं शिक्षक योग्यता से संतुष्ट पाए गए हैं, 33.3% छात्र इस व्यवस्था से असन्तुष्ट हैं। अतः प्राप्त आंकड़ों के अनुसार संस्थान की शिक्षण व्यवस्था एवं शिक्षक योग्यता काफी हद तक दुरुस्त है।

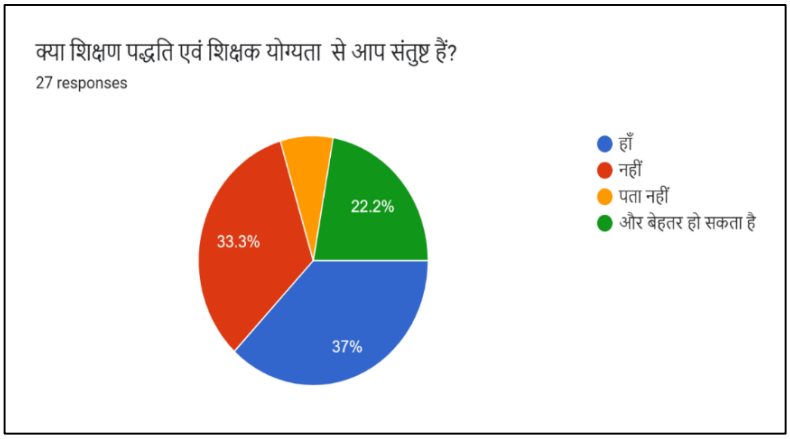

वृतीय आरेख – 06

उपरोक्त प्रश्न के अनुसार 70.4% छात्रों ने संस्थान के पास बेहतर पुस्तकालय एवं पर्याप्त अध्ययन सामग्री की उपलब्धता है। 29.6% छात्र इस व्यवस्था को पर्याप्त नहीं मानते हैं। अतः प्राप्त आंकड़ों के अनुसार संस्थान के पास एक बेहतर पाठ्य-पठन सामग्री उपलब्ध है।

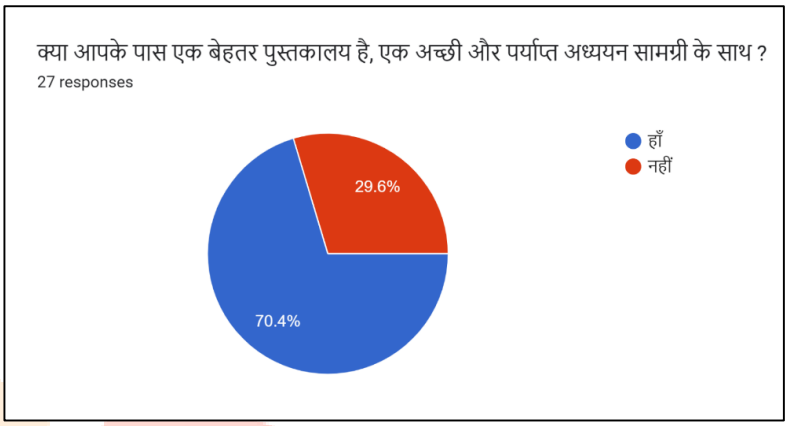

वृतीय आरेख – 07

उपरोक्त प्रश्न के अनुसार 66.7% छात्र का कहना है की वह प्रयोगात्मक कार्य हेतु अपने परिसर से बाहर जाते हैं, 33.3% छात्र का कहना है वह परिसर से बाहर नहीं जाते हैं। अतः प्राप्त आंकड़ों के अनुसार अधिकतम छात्र प्रयोगात्मक कार्य हेतु परिसर से बाहर जाते हैं।

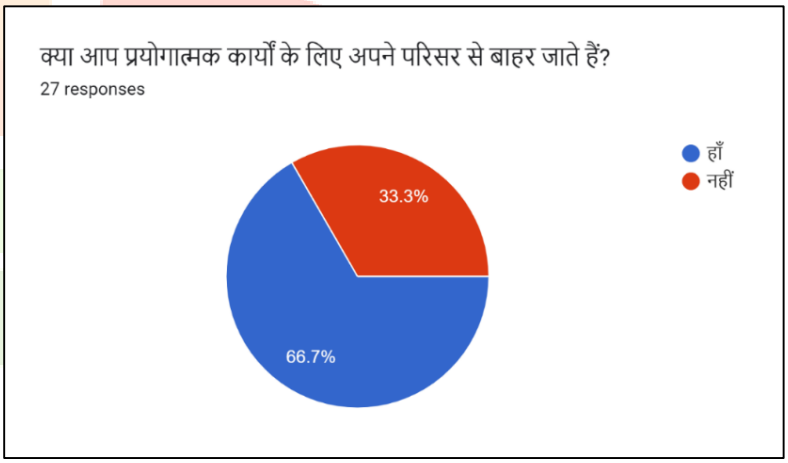

वृतीय आरेख– 08

उपरोक्त प्रश्न के अनुसार 48.1% छात्रों ने संस्थान के पाठ्यक्रम में सुधार हेतु सुझाव दिया है, 25.9% छात्र प्रयोगात्मक कार्य में वृद्धि हेतु संस्थान को सुझाव दे रहे हैं। प्राप्त आंकड़ों के अनुसार ज्ञात होता है की संस्थान को अपने पाठ्यक्रम में सुधार की आवश्यकता है।

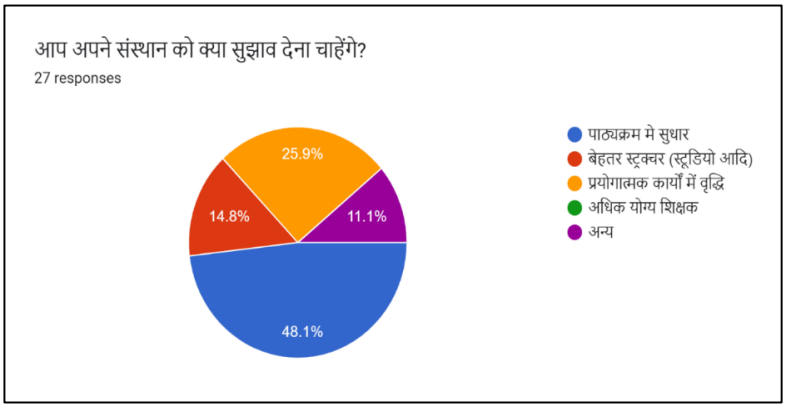

व्याख्या:

प्राप्त आंकड़ों और विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाओं के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि चयनित संस्थान) एचएनबी गढ़वाल केंद्रीय विश्वविद्यालय (में मीडिया शिक्षा की स्थिति संतुलित एवं समग्र है। छात्रों ने संस्थान के बेहतर बुनियादी ढांचे, प्लेसमेंट संभावनाओं और पाठ्यक्रम की संरचना को चयन का प्रमुख आधार माना है। साथ ही,

पाठ्यक्रम में निरंतर अद्यतन की आवश्यकता को स्वीकार किया गया है, जो आधुनिक शिक्षा की लय के अनुरूप है। तकनीकी संसाधनों, अनुभवी शिक्षकों, समुचित अध्ययन सामग्री, प्रयोगात्मक शिक्षा, औद्योगिक भ्रमण और शैक्षणिक गतिविधियों की उपस्थिति, संस्थान को एक समर्पित मीडिया शिक्षण केंद्र के रूप में स्थापित करती है। यह विद्यार्थियों के व्यावसायिक विकास के साथ-साथ उनकी सामाजिक चेतना को भी समृद्ध करता है।

निष्कर्ष:

एचएनबी गढ़वाल विश्वविद्यालय का पत्रकारिता एवं संचार केंद्र विभाग राज्य के दूरस्थ पहाड़ी क्षेत्रों के छात्रों को मीडिया के विविध क्षेत्रों में प्रशिक्षित कर रहा है। हालांकि यूजीसी के प्रतिमानों की पूर्ण पूर्ति अभी शेष है, फिर भी सीमित संसाधनों के बावजूद विभाग की कार्यप्रणाली और विस्तार इसे उत्तराखंड के एक प्रमुख मीडिया शिक्षण केंद्र के रूप में स्थापित करती है। उपरोक्त अध्ययन के माध्यम से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त होता है–

- उत्तराखंड की पत्रकारिता परंपरा ऐतिहासिक और समृद्ध रही है, फिर भी राज्य मीडिया शिक्षा का प्रमुख केंद्र नहीं बन पाया है।
- वर्तमान में राज्य के लगभग 17 विश्वविद्यालय मीडिया शिक्षा प्रदान कर रहे हैं, जिनमें निजी विश्वविद्यालय तकनीकी दृष्टि से अधिक सक्षम दिखते हैं, जबकि केंद्रीय विश्वविद्यालय को इस दिशा में अग्रणी भूमिका निभानी चाहिए।
- एचएनबी गढ़वाल केंद्रीय विश्वविद्यालय में पाठ्यक्रम, शिक्षक गुणवत्ता, तकनीकी संसाधन, शैक्षणिक दृष्टिकोण और प्लेसमेंट व्यवस्था संतोषजनक है।
- पाठ्यक्रम यूजीसी के निर्देशों के अनुसार है, परंतु भविष्य की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए उसमें सुधार की संभावनाएं विद्यमान हैं।
- छात्र-शिक्षक अनुपात यूजीसी मानकों के अनुसार संतुलित है, जिससे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित होती है।

सुझाव:

- यूजीसी निर्देशों के अनुसार पाठ्यक्रम का वार्षिक पुनरीक्षण किया जाए।
- AI, डिजिटल कंटेंट, मीडिया लॉ एंड एथिक्स जैसे विषय शामिल किए जाएं।
- फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम नियमित अन्तराल से आयोजित हों।
- इंडस्ट्री-एकेडेमिया साझेदारी को प्रोत्साहन मिले।

संदर्भ सूची:

शोध पत्र:

अनुराधा गौर मिश्रा) 2013). Media Education in India and United Kingdom: A Comparative Study. [Media Watch Journal]

Singh, Sukhnandan. (2015). Journalism for Nation Building with special reference to Media Education. Journal of Content, Community & Communication, Vol. 1 Year 1, 2015, Amity School of Communication, Amity University, Madhya Pradesh (ISSN: 2395-7514)

Pandey, Rajat & Vashishta, Smita & Kumari, Deepshikha. (2025). Status of Media Education in India: A Review Study. The Review of Contemporary Scientific and Academic Studies. Retrieved from http://dx.doi.org/10.55454/rcsas.5.02.2025.012

Pandey, Rajat & Singh, Sukhnandan. (2025). उच्च शिक्षण संस्थानों में पत्रकारिता एवं जनसंचार विषय के शैक्षणिक स्तर का अध्ययन एवं अवलोकन :उत्तराखंड राज्य के विशेष संदर्भ में .INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS. Volume 13. Retrieved from http://dx.doi.org/10.5281/zenodo.15147294

शोध प्रबंध:

पाण्डेय ,रजत) २०१९ : (उत्तराखंड के गढ़वाल क्षेत्र में मीडिया शिक्षा की स्थिति : एक अध्ययन।

डॉ .मेहरबान सिंह गुसाई) 2018 : (हिस्ट्री ऑफ उत्तराखंड

पुस्तकें-

शक्ति प्रसाद सकलानी) 2004 : (उत्तराखंड में पत्रकारिता का इतिहास

सिंह, देवव्रत. मीडिया मंथन. विजडम पब्लिकेशन (2018)

डंगवाल, ए. आर. पत्रकारिता के मूल तत्व. रजनी प्रिण्टर्स (2012)

Kumar, Keval J. Media education, communication, and public policy: an Indian perspective. Himalaya Pub. House, 1995.

वेबसाइट:

www.ugc.gov.in University Grants Commission. Model Curriculum for Mass Communication & Journalism.
www.hnbgu.ac.in (HNB Central University official site)
www.education.gov.in

वेबसाइट –

https://www.hindustantimes.com/dehradun/universities-grow-in-uttarakhand-but-education-quality-a-concern/story-9SuRDakLsDR6L2DPooSdmI.html.
https://timesofindia.indiatimes.com/City/Dehradun/Higher-education-in-doldrums-in-Uttarakhand/articleshow/49835578.cms
https://milunesco.unaoc.org/mil-articles/the-need-for-introducing-media-education-in-our-school-curriculum/
https://papers.ssrn.com/sol3/papers.cfm?abstract_id=2624234
https://doi.org/10.1177/1326365X1202200113
https://shodhganga.inflibnet.ac.in/bitstream/10603/203650/10/10_chapter4.pdf